1. रानी दुर्गावती

रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्टूबर, 1524 को कालिंजर के किले में हुआ था। उनका जन्म चंदेल राजपूत राजा शालभम के परिवार में हुआ था, जिन्होंने महोबा राज्य पर शासन किया था। 1542 में दुर्गावती ने गढ़ा साम्राज्य के राजा संग्राम शाह के सबसे बड़े बेटे दलपत शाह से विवाह किया। इस विवाह के माध्यम से महोबा के चंदेल और गढ़ा-मंडला राजवंश के राजगोंड एक-दूसरे के सहयोगी बन गए। 1550 से 1564 तक वह गोंडवाना की रानी रहीं। अपने बेटे वीर नारायण के नाबालिग होने के दौरान उन्होंने 1550 से 1564 तक गोंडवाना की रीजेंट के रूप में काम किया। उन्हें मुख्य रूप से मुगल साम्राज्य के खिलाफ गोंडवाना की रक्षा करने के लिए याद किया जाता है।

रानी रीजेंट

1550 में राजा दलपत शाह की मृत्यु हुई तब उनके उत्तराधिकारी युवराज वीर नारायण मात्र 5 वर्ष के थे। उनकी पत्नी रानी दुर्गावती ने नए राजा के अल्पवयस्क होने के दौरान रीजेंट के रूप में गोंडवाना साम्राज्य की बागडोर सँभाली। दीवान अधर कायस्थ और मंत्री मान ठाकुर ने प्रशासन को सफलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से सँभालने में इनकी मदद की। रानी दुर्गावती ने अपने पूरे राज्य में शांति, व्यापार और सद्भावना को बढ़ावा दिया। इन्होंने अपनी राजधानी सिंगोरगढ़ किले से चौरागढ़ किले में स्थानांतरित कर दी। यह सतपुड़ा पहाड़ी श्रृंखला पर स्थित सामरिक महत्त्व का किला था। शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद शुजा खान ने मालवा पर कब्ज़ा कर लिया और 1556 में उसके बेटे बाज बहादुर को उसका उत्तराधि कारी बना दिया। सिंहासन पर बैठने के बाद बाज बहादुर ने रानी दुर्गावती के गोंडवाना पर आक्रमण किया, लेकिन रानी दुर्गावती ने उसके आक्रमण को विफल कर दिया।

गोंडवाना पर मुगल आक्रमण

1562 में अकबर ने मालवा के शासक बाज बहादुर को हराया और मालवा पर कब्ज़ा करके उसे मुगल साम्राज्य बना दिया। परिणामस्वरूप रानी की राज्य सीमा मुगल साम्राज्य से जुड़ गई। रानी का समकालीन मुगल सेनापति ख्वाजा अब्दुल मजीद आसफ खान था, जिसने रीवा के राजा रामचंद्र सिंह को हराया था। वह रानी दुर्गावती और गोंडवाना की संपत्ति हथियाना चाहता था। उसने मुगल सम्राट अकबर से अनुमति प्राप्त करने के बाद रानी के राज्य पर आक्रमण कर दिया। जब रानी को आसफ खान के आक्रमण के बारे में पता चला, तो उन्होंने अपनी पूरी ताकत से अपने राज्य की रक्षा करने का फैसला किया, हालाँकि उनके दीवान, बेहर अधर सिम्हा (अधर कायस्थ) ने आक्रमणकारी मुगल सेना की ताकत के बारे में पहले ही चेतावनी दे दी थी, तो भी रानी ने कहा कि अपमानजनक जीवन जीने की तुलना में सम्मानपूर्वक मरना बेहतर है।

रक्षात्मक लड़ाई लड़ने के लिए वह नरई गईं, जो एक तरफ पहाड़ी श्रृंखला और दूसरी तरफ गौर और नर्मदा दो नदियों के बीच स्थित है। यह एक असमान लड़ाई थी, जिसमें हमलावर मुगल पक्ष

की ओर से प्रशिक्षित सैनिकों और आधुनिक हथियारों की भरमार थी और रानी दुर्गावती की ओर से पुराने हथियारों के साथ कुछ अप्रशिक्षित सैनिक थे। उनके फौजदार अर्जुन दास युद्ध में मारे गए। तब रानी ने खुद ही बचाव का नेतृत्व करने का फैसला किया। जैसे ही दुश्मन घाटी में घुसे, रानी के सैनिकों ने उन पर हमला कर दिया। दोनों पक्षों ने कुछ लोगों को खोया लेकिन रानी ने अधिक लोगों को खो दिया।

रानी के क्षेत्र बहुत संघीय थे। एक औसत ग़ैर-आदिवासी राज्य की तुलना में बहुत अधिक विकेंद्रित। किलेदार जिले थे, जो प्रशासनिक इकाइयाँ थीं और उन्हें या तो सीधे राजा द्वारा या अधीनस्थ सामंती प्रभुओं (जागीरदारों) और कनिष्ठ राजाओं के माध्यम से नियंत्रित किया जाता था। लगभग आधे गाँव सामंती प्रभुओं के हाथों में थे। ये स्थानीय राजा सैनिकों की भर्ती करते थे और युद्ध के समय अपने संप्रभु को हथियार भी देते थे। इन सैनिकों की भर्ती के मानक, प्रशिक्षण और उपकरण एक समान नहीं थे और अकसर घटिया होते थे। इसके अलावा सामंती प्रभुओं का युद्ध के दौरान सेना के कुछ हिस्सों पर बहुत अधिक प्रभाव था। इस विकेंद्रीकृत संरचना ने आक्रमणकारी मुगलों के खिलाफ युद्ध के दौरान बहुत नुकसान पहुँचाया।

रानी ने अपने सलाहकारों के साथ एक रणनीति बनाई। वह रात में आक्रमणकारी मुगल सेना पर छापामार हमले को जारी रखना चाहती थीं, लेकिन उनके सरदारों ने उन्हें हतोत्साहित किया और आग्रह किया कि वह दिन के उजाले में आक्रमणकारी सेना से खुला युद्ध करे। लेकिन अगली सुबह तक मुगल सेनापति आसफ खान ने बड़ी तोपें मँगा लीं। रानी अपने हाथी पर सवार होकर युद्ध के लिए आईं। उनके बेटे युवराज वीर नारायण ने भी इस युद्ध में भाग लिया। उन्होंने आक्रमणकारी मुगल सेना को तीन बार पीछे हटने पर मज़बूर किया, लेकिन अंत में वे घायल हो गए और उन्हें सुरक्षित स्थान पर जाना पड़ा। युद्ध के दौरान रानी के कान के पास एक तीर से गंभीर चोट लग गई। एक अन्य तीर उनकी गर्दन में जा लगा और वे बेहोश हो गईं। होश में आने पर उन्हें लगा कि हमारी हार निश्चित है। उनके महावत ने उन्हें युद्ध के मैदान से चले जाने की सलाह दी, लेकिन उन्होंने मना कर दिया और 24 जून, 1564 को अपना खंजर निकालकर स्वयं को मार डाला। उनके शहादत दिवस को 'बलिदान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

जम्मूतवी के बीच चलने वाली ट्रेन का नाम उनके सम्मान में दुर्गावती एक्सप्रेस (11449/11450) रखा गया। भारतीय तटरक्षक बल ने 14 जुलाई, 2018 को अपनी तरह का तीसरा तटीय गश्ती पोत (आईपीवी) आईसीजीएस रानी दुर्गावती को नौसेना में शामिल किया।

2. दुर्गा भाभी

दुर्गा भाभी, जिनका असली नाम दुर्गावती देवी था, एक भारतीय क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थीं, जो 7 अक्टूबर, 1907 को उत्तर प्रदेश के शहजादपुर गाँव में जन्मी थीं। वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट

रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के सदस्य भगवती चरण वोहरा की पत्नी थीं, जिसके कारण उन्हें 'दुर्गा भाभी' कहा जाने लगा।

यहाँ दुर्गा भाभी के जीवन के बारे में कुछ अन्य जानकारी दी गई है–

- **जन्म और परिवार :** दुर्गावती देवी का जन्म 7 अक्टूबर, 1907 को पंडित बांके बिहारी के घर हुआ था, जो इलाहाबाद कलेक्ट्रेट में काम करते थे।
- **विवाह :** उनका विवाह 11 साल की उम्र में भगवती चरण वोहरा के साथ हुआ था।
- **क्रांतिकारी गतिविधियों में भागीदारी :** दुर्गावती देवी ने अपने पति के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- **भगत सिंह से संबंध :** दुर्गावती देवी को भगत सिंह और उनके साथियों के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने का मौका मिला।
- **लाहौर में गिरफ्तारी :** 1926 में लाहौर में हुई एक घटना के लिए दुर्गावती देवी को गिरफ्तार किया गया था।
- **स्वतंत्रता संग्राम में योगदान :** दुर्गावती देवी ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसलिए उन्हें एक साहसी महिला क्रांतिकारी के रूप में जाना जाता है।
- **मृत्यु :** दुर्गावती देवी का निधन 15 अक्टूबर, 1999 को हुआ था।
- **अन्य उल्लेखनीय बातें :**

* दुर्गावती देवी ने अपने पति भगवती चरण वोहरा के साथ मिलकर नौजवान भारत सभा की स्थापना की।
* कहा जाता है कि दुर्गावती देवी ने क्रांतिकारियों को हथियार पहुँचाने का काम किया था।
* चंद्रशेखर आजाद ने जिस पिस्तौल से अँग्रेज़ों से मुकाबला किया था, वह दुर्गावती देवी ने ही उन्हें दी थी।
* दुर्गावती देवी ने 1939 में मद्रास जाकर मारिया मांटेसरी से मांटेसरी पद्धति का प्रशिक्षण लिया और 1940 में लखनऊ में मांटेसरी विद्यालय खोला।